IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आत्मवादी विचारधारा के विकास का विष्लेशणात्मक अध्ययन

डॉ. प्रेमनारायण अहिरवार

विषय–संस्कृत

षोध सार

हिन्दू धर्म में आत्मा को मूल रूप में चेतन माना गया है। शाष्वत होने के कारण आत्मा अपने वास्तविक रूप में अपरिवर्तनशील है। इसलिए आत्मा को निष्क्रिय कहा जा सकता है। सक्रियता से परिवर्तन का बोध होता है। आत्मा काल और में व्याप्त नहीं है। कार्य कारण का विकल्प भी आत्मा पर नहीं लागू होता है। इस प्रकार आत्मा पूर्णतः स्वतन्त्र है। हिन्दू धर्म में आत्मा की अने कता पर बल दिया गया है। प्रत्येक शरीर में एक भिन्न आत्मा का निवास है। जितने जीव हैं उतनी आत्माएँ हैं। इस प्रकार हिन्दू धर्म अनेकात्मवाद का समर्थन करता है।

कुछ दर्शनों में आत्मवाद और अनात्मवाद का समन्वय भी पाया जाता है; यथा जैन दर्शन में। आत्मवाद ब्राह्मणपंरपरा या श्रौतदर्शन माना जाता है; अनात्मवाद के अंतर्गत चार्वाक के लोकायत और श्रमणपरंपरा के बौद्ध दर्शन का समावेश होता है। पुद्गल प्रतिषेधवाद और पुद्गल नैरात्मवाद भी इसके निकटतम दर्शनाम्नाय हैं।

मुख्य बिंदु– आत्मवादी, विचारधारा, जोवारमा, आंषिक, बनित्य, जीवात्मा, व्यवहारिक, मानसिक, नैतिक, भौतिक, बुद्धि।

षोध प्रपत्र

चार्वाक दर्शन में परमात्म तथा आत्म दोनों तत्वों का निषेध है। **"वह विशुद्ध भौतिकवादी दर्शन है। किंतु समन्वयार्थी बुद्ध ने कहा कि रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार विज्ञान ये पाँच स्कंध आत्मा नहीं हैं। पाश्चात्य दर्शन में ह्यूम की स्थिति प्रायरू इसी प्रकार की है; वहाँ कार्य–कारण–पद्धति का प्रतिबंध है और अंततः सब क्षणिक संवेदनाओं का समन्वय ही अनुभव का आधार माना गया है।"**[1] आत्मा स्कंधों से भिन्न होकर भी आत्मा के ये सब अंग कैसे होते हैं, यह सिद्ध करने में बुद्ध और परवर्ती बौद्ध नैयायिकों ने बहुत से तर्क प्रस्तुत किए हैं। बुद्ध कई अंतिम प्रश्नों पर मौन रहे। उनके शिष्यों ने

उस मौन के कई प्रकार के अर्थ लगाए। थेरवादी नागसेन के अनुसार रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान का संघात मात्र आत्मा है। उसका उपयोग प्रज्ञप्ति के लिए किया जाता है। अन्यथा वह अवस्तु है। आत्मा चूँकि नित्य परिवर्तनशील स्कंध है, अतरू आत्मा इन स्कंधों की संतानमात्र है। दूसरी ओर वात्सीपुत्रीय बौद्ध पुद्गलवादी हैं, इन्होंने आत्मा को पुद्गल या द्रव्य का पर्याय माना है। वसुबंधु ने अभिधर्मकोश में इस तर्क का खंडन किया और यह प्रमाण दिया कि पुद्गलवाद अंततः पुनः शाष्वतवाद की ओर हमें घसीट ले जाता है, जो एक दोष है। केवल हेतु प्रत्यय से जनित धर्म है, स्कंध, आयतन और धातु हैं, आत्मा नहीं है। सर्वास्तिवादी बौद्ध संतानवाद को मानते हैं। उनके अनुसार आत्मा एक क्षण–क्षण–परिवर्ती वस्तु है। हेराक्लीतस के अग्नितत्व की भाँति यह निरंतर नवीन होती जाती है। विज्ञानवादी बौद्धों ने आत्मा को आत्मविज्ञान माना। उनके अनुसार बुद्ध ने, एक ओर आत्मा की चिर स्थिरता और दूसरी ओर उसका सर्वथा उच्छेद, इन दो अतिरेकी स्थितियों से भिन्न मध्य का मार्ग माना। **''योगाचारियों के मत से आत्मा केवल विज्ञान है। यह आत्मविज्ञान विज्ञप्ति मात्रता को मानकर वेदांत की स्थिति तक पहुँच जाता है। सौत्रांतिकों ने–दिङ;नाग और धर्मकीर्ति ने–आत्मविज्ञान को ही सत और ध्रुव माना, किंतु नित्य नहीं।''**[2]

''पाश्चात्य दार्शनिकों में अनात्मवाद का अधिक तटस्थता से विचार हुआ, क्योंकि दर्शन और धर्म वहाँ भिन्न वस्तुएँ थीं। लॉक के संवेदनावाद से शुरु करके कांट ओर हेगेल के आदर्शवादी परा–कोटि–वाद तक कई रूप अनात्मवादी दर्शन ने लिए।''[3] परन्तु हेगेल के बाद मार्क्स, रोंगेतस आदि ने भौतिकवादी दृष्टिकोण से अनात्मवाद की नई व्याख्या प्रस्तुत की। परमात्म या अंशी आत्मतत्व के अस्तित्व को न मानने पर भी जीवजगत की समस्याओं का समाधान प्राप्त हो सकता है।

''हिन्दू धर्म में आत्मा को जीवात्मा कहा जाता है। जीवात्मा (प्दकपअपकनंस `मसा) परमात्मा (नचतमउम`मसा) से भिन्न हैं। ईष्वर का ज्ञान निस्य है। परन्तु जोवारमा का ज्ञान बनित्य, आंशिक और सीमित है। ईष्वर सभी प्रकार की पूर्णताओं से युक्त हैं। जब कि जीवात्मा अपूर्ण है।''[4] जीवात्मा शरीर में व्याप्त है परन्तु ईष्वर शरीर से स्वतंत्र है। यद्यपि जीवत्मा का सम्बन्ध शरीर से है फिर भी वह शरीर से पूर्णतः मिन्न है। आत्मा और शरीर के भेद पर हिन्दू धर्म अत्यधिक बल देता है। आत्मा सिर्फ शरीर से ही पृथक नहीं है बल्कि इन्द्रिय, मन तथा बुद्धि से भी भिन्न है।

आत्मा का सम्बन्ध जब शरीर से होता है तो आत्मा के कुछ व्यवहारिक गुण (म्उ. चपतपबंस बींतंबजमते) दिखलाई पड़ते हैं। इनमें कुछ गुण भौतिक कुछ मानसिक और कुछ नैतिक हैं।

''भौतिक गुण की दृष्टि से जीवात्मा के तीन शरीर हैं। वे हैं स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर आत्मा का स्थूल शरीर माता–पिता की देन है। स्थूल शरीर पाँच स्थूल भूतों से निर्मित होता है। स्थूल शरीर का विकास अन्त से होता है। इसलिए इसे अन्नमय कोश भी कहा जाता है।''[5]

"दूसरे प्रकार का शरीर जो आत्मा ग्रहण करती है उसे सूक्ष्म शरीर कहा जाता है। इसे लिंग शरीर भी कहा जाता है क्यों कि यह चिह्न का काम करता है जिसके द्वारा हमें आत्मा के अस्तित्व का ज्ञान होता है। सूक्ष्म शरीर पाँच ज्ञानेन्द्रिय पाँच कर्मेन्द्रिय पाँच प्राण, मनस् और बुद्धि इन सत्तरह तत्वों से बना रहता है।"[6] इसलिए इसे प्राणमय, मनोमय और विज्ञानमय का संयोजन कहा जाता है। पाप–पुण्य सूक्ष्म शरीर में संचित रहते हैं और जब जीव दूसरे शरीर में जन्म लेता है तब सूक्ष्म शरीर ही उसके साथ जाता है । तीसरे प्रकार का शरीर कारण शरीर कहा जाता है। यह अविधा से निर्मित होता है। कारण शरीर उपर्युक्त दोनों जीवात्माओं के शरीरों का कारण है। आत्मा व्यावहारिक सीमाओं से मुक्त रहती है। आम के चौतन्य की यह विष्वातीत अवस्था (ज्तंदेबमदकमदजंस`जंजम) कही जा सकती है।

आत्मा के नैतिक गुण भौतिक और मानसिक गुणों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हैं। आत्मा के भौतिक और मानसिक गुणों का आधार नैतिकता है। व्यक्ति का शरीर, परिवार तथा समाज आदि उसके नैतिक कर्मों की देन है। व्यक्ति शुभ और अशुभ कर्म करता है। शुभ कम से पुण्य की प्राप्ति होती है तथा अशुभ कर्म से पाप की प्राति होती है सभी क्रियाओं का आधार व्यक्ति की प्रकृति है जो सत्व, रजो तथा तमो गुण से अच्छा दित है। **"मानव स्वरूप की विभिन्नता के आधार पर उसके गुणों में भी विभिन्नता पाई जाती है। जिस व्यक्ति का स्वरूप साविक है उसमें धर्म ज्ञान निःस्वार्थ तथा विशिष्टता जैसे गुण पाये जाते हैं । जिस व्यक्ति में रजो गुण को प्रधानता है अर्थात् जो राजनिक है वे धन, भक्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। जिस व्यक्ति में तमो गुण की प्रधानता रहती है अर्थात् जो तामसिक हैं उनमें अधर्म, अज्ञान, लोभ, उदासीनता जैसे बुरे गुण पाये जाते हैं।"[7]**

नैतिक स्थिति की दृष्टि से जीवात्मा तीन प्रकार का माना गया है। वे है नित्य और बद्ध। नित्य जीव वे हैं जो, निरन्तर मुक्त रहे हैं। ये कभी भी बन्धन ग्रस्त नहीं मुक्त हो सके हैं। नारद, प्रहलाद इस कोटि के जीव के उदाहरण है।

"मुक्त जीव उन आत्माओं को कहा जाता है जो कभी बन्धन ग्रस्त थे परन्तु अब मुक्त हो चुके हैं। जनक, वशिष्ट इस कोटि के जीव कहे जा सकते हैं। बद्ध जीव वे हैं जो निरन्तर बन्धन में रहते हैं। इस कोटि के जीव का उदाहरण साधारण मनुष्य है।"[8] हिन्दू धर्म में जीवात्मा को अमर माना गया है। बात्मा अविनाशी है। भगवद्गीता में आत्मा के अमरत्व की व्याख्या निम्नांकित शब्दों में हुई है

सन्दर्भ सूची

1. अनात्मवाद (हिन्दी) भारतखोज। अभिगमन तिथि 16 जून, 2014
2. राहुल सांकृत्यायनः दर्शनदिग्दर्शन;
3. आचार्य नरेंद्रदेवः बौद्धधर्म दर्शन;
4. भरतसिंह उपाध्यायः बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन;
5. डॉ. देवराजः भारतीय दर्शन;
6. बर्ट्रैंड रसेलः हिस्ट्री ऑव वेस्टर्न फ़िलासफ़ी;
7. एम.एन.राः हिस्ट्री ऑव वेस्टर्न मैटीरियालिज्म
8. सिन्हा प्रसाद हरेन्द, धर्म–दर्षन की रूप रेखा, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाषन, संस्करण–1992